नवजात शिशुओं को जैन बनाने की विधि

श्री मंदिर जी में एक रंगीन वस्त्र पर सुन्दर स्वास्तिक बनायें। उस वस्त्र पर बालक को पूर्वाभिमुख या उत्ताराभिमुख सुलादें। फिर किसी घर के बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा उसके भाल स्थल पर केसर का तिलक लगा दें। फिर उसके दाएं कान में नौ बार श्री णमोकार मंत्र सुना दें। फिर बाएं कान में भी नौ बार श्री णमोकार मंत्र सुना दें। इसके बाद मंत्र पढ़े "ॐ नमोअर्हंते भगवते जिनभास्कराय तव मुखं बालकं दर्शयामि दीर्घायुक्तं कुरू कुरू स्वाहा" फिर उससे कहे कि हे चिरंजीव आज से तुम श्री जिनेन्द्र देव के समक्ष जैन धर्म के उपासक बन गये हो ऐसा कहकर उसके शरीर पर गन्धोदक की हल्की सी वर्षा कर दें। फिर एक जटावाला सूखा सुन्दर नारियल उससे चढ़वा देवें। माता-पिता अपनी शक्ति के अनुसार बालक को जैन बनने की खुशी में श्री मंदिर जी में दान देवें। तथा अपने परिवार जनों के साथ मिलकर मंगलगीत आदि कार्यक्रम रखें।